वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष - २५ अगस्त - २०२५ प्रकाशन - ८

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

अगस्त २०२५

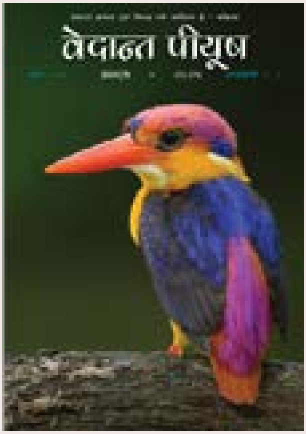

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

वेदान्त पीयूष

विषय सूचि

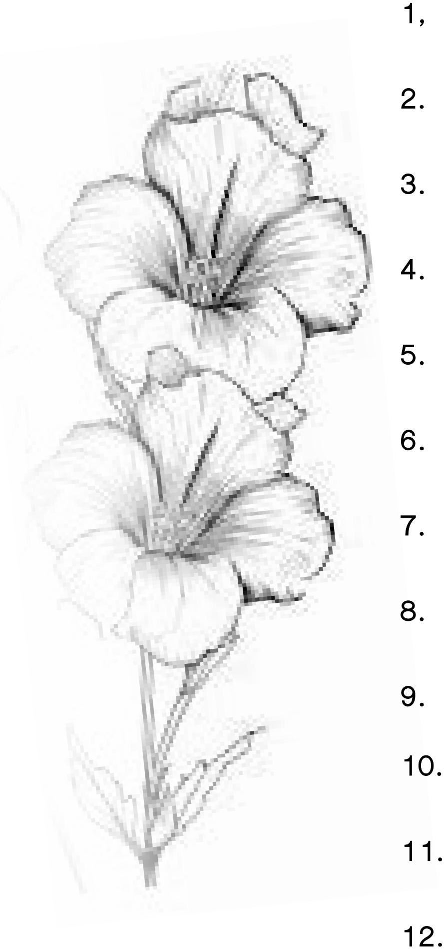

1,	प्रकाशक पृष्ठ	02
2.	श्लोक	05
3.	पू. गुरुजी का संदेश	06
4.	वाक्यवृत्ति	12
5.	गीता और मानवजीवन	16
6.	जीवन्मुक्त	21
7.	श्री कौशल्या चरित्र	25
8.	कथा	28
9.	आश्रम-मिशन समाचार	33
10.	आगामी कार्यक्रम	48
11.	इण्टरनेट समाचार	49
12.	लिन्क	50

अगस्त 2025

आत्मबोध

श्लोक : ४९

जीवन्मुक्तस्तु तद्विद्वान्
पूर्वोपाधिगुणांस्त्यजेत्।
सच्चिदानन्दरूपत्वात्
भवेद्भ्रमरकीटवत्॥

जीवन्मुक्त विद्वान अपनी समस्त पूर्व उपाधियोंका त्याग करके सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म हो जाता है। जैसे कीटक सतत भ्रमर का ध्यान करते हुए भ्रमररूप हो जाता है।

सन्देश

पूज्य गुरुजी
स्वामी आत्मानन्दजी

कर्म का प्रत्यक्ष रूप

योग को भगवद् गीता ने 'समत्व' के रूप में परिभाषित किया है, जहां भगवान ने बताया 'समत्वं योग उच्यते'। इसे यहां संक्षेप में समझने का प्रयास करेंगे। समत्व केवल समानता नहीं है; किन्तु समानता का तत्त्व भी है अर्थात् सन्तुलन बनाए रखते हुए सक्रिय रचनात्मक क्रिया करना। इसलिए, समत्व बहुत जीवन्तता से युक्त है, जो बुद्धिमत्ता, परिपूर्णता और सभी के प्रति प्रेम की सुगन्ध से परिपूर्ण है। जीवन उतार-चढ़ाव से भरा है, इसलिए सदैव सम्भावित परिवर्तनों का सामना करना पडता है। हम सदैव निर्णय लेने के मोर्चे पर रहते हैं।

जीवन के उतार-चढ़ाव

यह कहना सही नहीं है कि जीवन में केवल उतार-चढ़ाव ही है, जीवन तो बस जीवन है, वास्तव में चीजें जैसी है, वैसी ही

है – न अच्छी, न बुरी, न किसी के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए उतार–चढ़ाव। उतार–चढ़ाव हमारे लक्ष्यों के सापेक्ष होते हैं। जब हम किसी विशेष परिस्थिति की इच्छा रखते हैं और उसे पाने के लिए कार्य करते हैं, तो हमें मौजूदा परिस्थिति में परिवर्तन करके एक नई परिस्थिति बनानी होती है। यही चीज चुनौतियां और तथाकथित उतार–चढ़ाव लाती है। इसलिए, हर महत्वाकांक्षी व्यक्ति के जीवन में उतार–चढ़ाव अनिवार्य है। जिस पल भी हम किसी लक्ष्य की इच्छा करते हैं, हम स्वयं अपने लिए उतार–चढ़ाव बना लेते हैं, जो सार्वभौमिक नहीं, बल्कि व्यक्तिगत होते हैं। कुछ परिस्थितियां अनुकूल होती है, किन्तु अधिकतर नहीं भी होती है। एक कर्मयोगी के लिए सबसे बडी चुनौति और प्राथमिकता अपना संतुलन बनाए रखना है, न कि पसंद–नापसंद की दुनिया में प्रवाहित होना।

समत्व क्या है?

समत्व अर्थात् समता हमारी वह क्षमता है, जिससे हम चुनौतियों और अनुकुलता–प्रतिकुलता के मध्य भी अपनी विचारशीलता और भावनात्मक संतुलन बनाए रख पाते हैं। यह हमारे भावनात्मक

और बौद्धिक स्तर के ग्राफ को लगातार उपर ले जाना है। कई परिस्थितियों में हमें अन्य के सुख-दुःख को महसूस करने की आवश्यकता होती है, किन्तु गइहराई में हम स्वयं पर स्वामित्व बनाए रखते है और मानवीय ढंग से कार्य करते हैं। समत्व बनाए रखने की क्षमता के लिए गहरी निःस्वार्थता की आवश्यकता होती है। यदि हमारे परं लक्ष्य केवल भौतिक जगतपरायण हैं, न कि आध्यात्मिक, तो कोई भी बाह्य वस्तु हमें प्रभावित कर सकती है या तोड़ सकती है। किन्तु एक कर्मयोगी का वास्तविक लक्ष्य मूलरूप से आध्यात्मिक होता है, इसलिए एक चुनौति है कि हम अपनी बुद्धि को सूक्ष्म, प्रबुद्ध विचारशील बनाएं और फिर यह गहराई में श्रद्धा बनाए रखें कि, हम ही यह अनन्त, दिव्य तत्त्व हैं और यह जगत परिवर्तनशील, क्षणभंगूर है। इस श्रद्धा को प्रतिपल बनाए रखना ही एक कर्मयोगी का वास्तविक लक्ष्य है।

एक कर्मयोगी के लक्ष्य

एक कर्मयोगी शुरु में अपने मन को शुद्ध करने और अपनी बुद्धि को प्रबुद्ध और सूक्ष्म करने के लिए कार्य करता है, और अन्ततः वेदान्त के सत्य की श्रद्धा रखता है। चुनौतिपूर्ण क्षेत्र में कार्य करने के लिए, हमें बाहर कुछ लक्ष्यों की अवश्यकता होती है

और हम अपनी शिक्षा और आकांक्षाओं के अनुसार उन लक्ष्यों का चुनाव करते हैं। हमें बड़ी चुनौतियों और लक्ष्यों की आवश्यकता है, जो आदर्शरूप से हमारे संगठन या उससे भी अधिक जगत के हित के लिए हो। कर्मक्षेत्र में जाना सदैव अशान्त समुद्र में जाने जैसा होता है, किन्तु अगर लक्ष्य सर्फिंग सीखना है, तो बड़ी लहरों से विचलित नहीं होते है, बल्कि उनका स्वागत करते हैं। कोई भी सागर हो सकता है, हमें बस लहरों, उतार–चढ़ावों की जरूरत है, और अगर इस प्रक्रिया में हम देश या दुनिया की भलाई के लिए कुछ कर पाते हैं, तो यह और भी बेहतर है। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा एक कर्मयोगी का मार्ग नहीं है। उसकी वास्तविक यात्रा भीतर की ओर होती है, इसलिए बाहर की परिस्थितियों की परवाह किए बिना वह समत्व बनाए रख सकता है।

भक्ति और कर्मयोग

पूरी तरह से निःस्वार्थ होने के साथ–साथ प्रेरित भी रहना एक मुश्किल समन्वय है। किन्तु ईश्वर के प्रति भक्ति से यह बात सम्भव हो सकती है। एक कर्मयोगी दुनिया में एक दीन, सीमित, असुरक्षित और संकुचित व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि ईश्वर के एक निमित्त के रूप में कर्म करता है। सनातन

कर्म का प्रत्यक्ष रूप

धर्म में हर व्यक्ति ईश्वर की सन्तान है। हम ईश्वर के अंश, उनकी सन्तान है- यह विश्वास करने मात्र से जीवन परिवर्तित हो जाता है। हमें वास्तव में, स्पष्ट रूप से ईश्वर के अस्तित्व को देखना होगा और उसके उपरान्त उनके दूत बनना होगा। इस सुव्यवस्थित, सुन्दर जगत को देखने पर उनके संदर्भ में कोई प्रश्न ही नहीं रहना चाहिए, क्योंकि हर कार्य का कोई न कोई कारण होता है - इसलिए यह व्यवस्थित और सुन्दर सृष्टि ईश्वर के अस्तित्व का सबसे अच्छा प्रमाण है। उनके निमित्त बनने से सभी व्यक्तिगत असुरक्षाएं समाप्त हो जाएगी और ईश्वर की इच्छा ही हमारी अन्तः प्रेरणा बन जाएगी। इस प्रकार प्रेरित होते हुए भी निःस्वार्थ रहेंगे।

ओम् तत्सत्।।

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

वाक्यवृत्ति

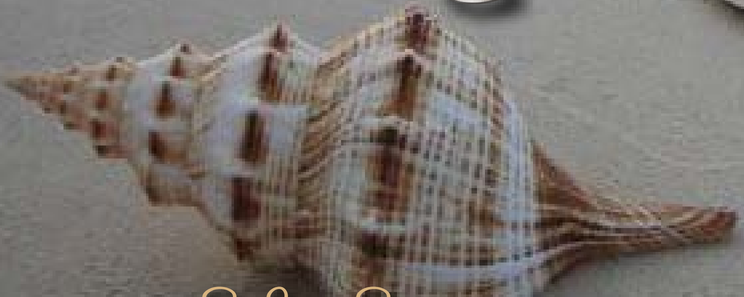

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्व परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्यान्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

श्लोक – २९

पर प्रेमास्पदतया
मा न भूवमहं सदा।
भूयासमिति यो द्रष्टा
सोऽहमित्यवधारय।।

मैं कभी न होउं ऐसा न हो, किन्तु मैं सदैव रहूं, इस प्रकार जो अत्यन्त प्रेम का विषय है, वह द्रष्टा मैं हूं – ऐसा निश्चय करो।

वाक्य वृत्ति

पूर्व श्लोकों में आचार्य ने हमें अपनी आनन्दस्वरूपता के बारे बताते हुए कहा कि द्रष्टा सर्व प्रियतमः – हम द्रष्टा अपने आपको सर्वाधिक प्रिय है। हमारी अपने बारे में यह इच्छा कि हम सदैव बने रहे, हमारा कभी भी अन्त न हो, यही बिना किसी शर्त के अपने प्रति प्रियता का सूचक है। मेरे लिए जो कुछ भी प्रिय है, मैं उसका आनन्द तभी ले सकता हूं कि जब मेरा अस्तित्व होगा। परप्रेमास्पद होने का अर्थ है कि बिना किसी शर्त, निरपेक्ष रूप से प्रेम का पात्र होना। मैं बिना किसी शर्त के प्रेम का पात्र होने से स्वयं से प्रेम करता हूं।

हर व्यक्ति चाहता है कि मा न अभूवम् – ‘मेरा कभी अस्तित्व समाप्त न हो, किन्तु अहं सदा भूयासम् – हम सदैव बने रहें। अपना अस्तित्व हमें सर्वाधिक प्रिय है। अपने अस्तित्व को सुखद रूप से बनाए रखने के लिए हमारे सुख-सुरक्षा के प्रयास रहते

वाक्यवृत्ति

है। सभी कर्मों की धूरी 'मैं' ही हुआ करती है। हम उसे ही सुखी और सुरक्षित रखना चाहते है जो हमें सर्वाधिक प्रिय होता है।

यद्यपि कई बार यह भी देखते हैं कि कई लोग आत्महत्या करते है, इसका यह अभिप्राय नहीं है कि वह अपने प्रति घृणा करता है। यह तो अपनी परं प्रियता का सर्वोच्च प्रमाण है। जब कोई व्यक्ति को यह महसूस होता है कि दुनिया में सब ओर से 'मैं' को कष्ट ही कष्ट प्राप्त हो रहे है। उससे बचने का यहां रहते हुए कोई भी मार्ग नहीं दीखता है। तब वह स्वयं को पीड़ा से मुक्त करने के लिए इस दुनिया से ही निष्कासित होना चाहता है। क्योंकि हम अपने प्रियतम 'मैं' को कष्ट में नहीं रखना चाहते। इस प्रकार आचार्य आनन्दस्वरूपता के निर्धारण के लिए सर्वप्रथम अपने इस द्रष्टा स्वरूप मैं का प्रियतमत्व सिद्ध करते हैं कि 'वह प्रियतम द्रष्टा मैं ही हूं - इति अवधारय।

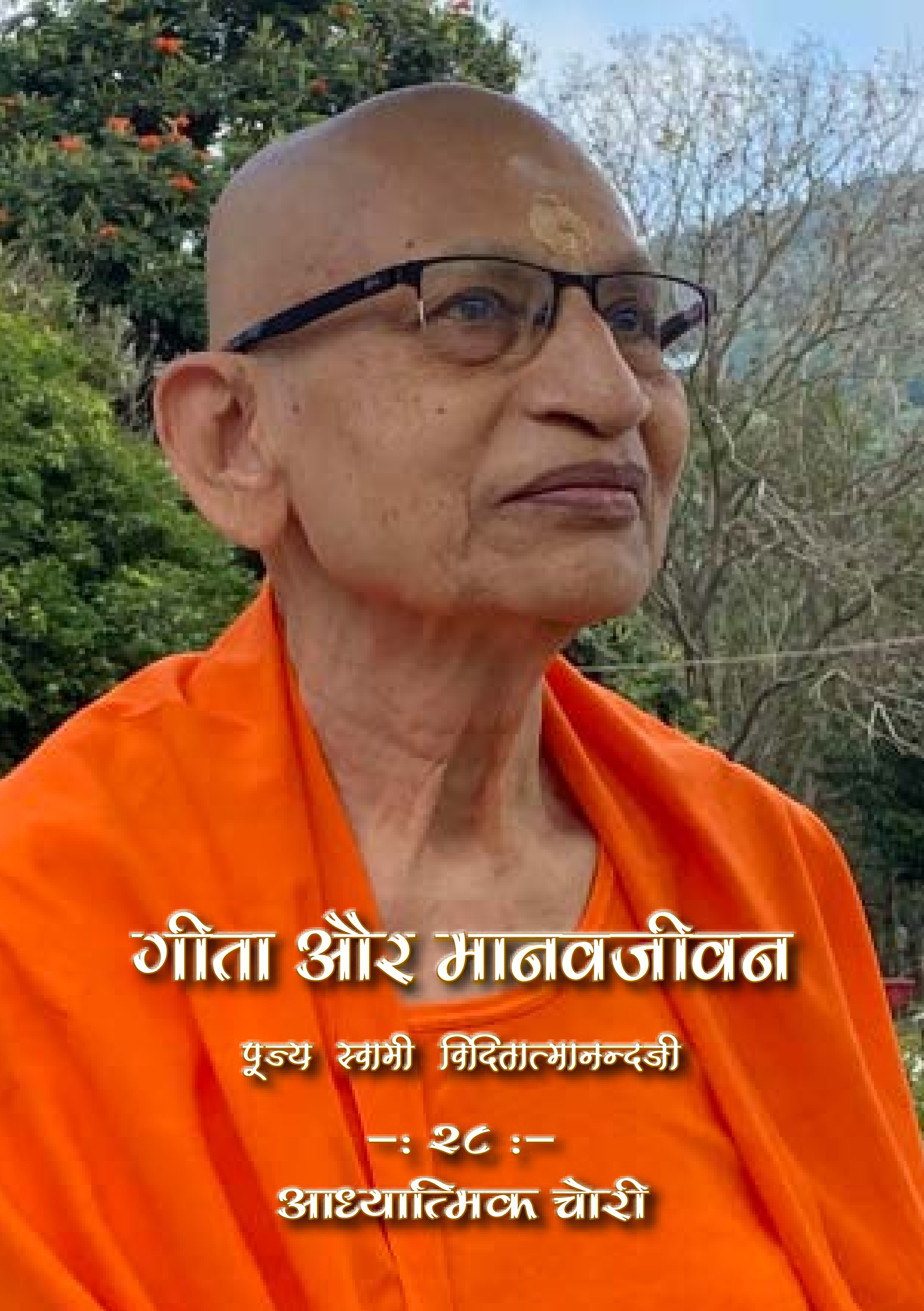

गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

-: २८ :-

आध्यात्मिक चोरी

गीता और मानवजीवन

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुक्ते स्तेन एव सः।।

भगवान यहां चोरी की व्याख्या देते हैं। भौतिक चोरी से तो हम सब परिचित है ही, स्थूल चोरी, जैसे कस्टम चोरी, इन्कमटेक्स चोरी इत्यादि। ऐसी चोरी करनेवाला बुद्धिमान् माना जाता है और ऐसा नहीं करनेवाला मूर्ख माना जाता है। इतना ही नहीं, ऐसी चोरी के लिए लोग बुद्धिमान् कन्सल्टण्ट भी रखरते है – टेक्स कन्सल्टण्ट, टेक्स प्लानिंग! सरकारी चोरी करना, अन्य का छीन लेना, अन्य के धन पर बुरी नजर रखना, यह मनुष्य का स्वभाव हो गया है। इसलिए उपनिषद् बताते हैं कि किसी के भी धन की लालच न करो – तुम्हारे या अन्य के भी। भगवान यहां गीता में भी एक प्रकार की नैतिक चोरी की बात करते हैं।

गीता और मानवजीवन

वैदिक यज्ञ में देवताओं का आवाहन किया जाता है और फिर उनको आहुति दी जाती है, जिससे कि वे पुष्ट हो, सन्तुष्ट हो। इस यज्ञभाव से देवताओं को न दिया जाय तो यह आध्यात्मिक चोरी है।

भगवान कहते हैं कि कर्म भी एक यज्ञ है। जैसे पृथ्वी, वायु, अग्नि, जल ये सब समर्पण की भावना से कर्म कर रहे हैं, वैसी समर्पण की भावना से हम भी कर्म करे। जैसे वैदिक यज्ञ में दी हुई आहुति देवताओं पहुंचती है, वैसे कर्म में समर्पण की भावनारूप आहुति भी देवताओं को पहुंचती है और देवता उससे संतुष्ट भी होते हैं।

'यज्ञ से प्रसन्न हुए देवता अवश्य ही तुम्हें इष्ट भोग प्रदान करेंगें।' यह जो कुछ वस्तुएं जीवन में प्राप्त होती है, वह किसकी वजह से प्राप्त होती है? देवताओं के या ईश्वर के अनुग्रह के कारण। हम ऐसा मानते हैं कि अपनी शक्ति से, अपनी बुद्धि से हमने स्वयं प्राप्त किया है, तो यह मिथ्या अहंकार ही है। सत्य तो यह है कि जो कुछ प्राप्त होता है, वह देवतारूप ईश्वर से ही प्राप्त होता है। मनुष्य को अभिमानी नहीं बनना चाहिए। हमें ऐसा नहीं मानना चाहिए कि हमने अपनी स्वतंत्र बुद्धि व

शक्ति से कुछ पाया हैं। क्योंकि मनुष्य हाथ से जब कर्म करता है तब हाथ किसकी वजह से कर्म कर सकते हैं? देवता मात्र स्वर्ग में ही निवास नहीं करते, हमारे देह में भी ये देवता अंशरूप से निवास करते हैं। अपने देह की या इन्द्रिय की जो कुछ क्रियाएं है उसका संचालन देवता लोग करते हैं। और उनके अनुग्रह से ही ये सब क्रियाएं सम्भव होती है। इन्द्र का अनुग्रह यदि प्राप्त न हो तो यह हाथ भी उठा नहीं सकते। पाद के देवता विष्णु है, उनका अनुग्रह नहीं हो तो पैर कार्य नहीं कर सकते, चल नहीं सकते। आंखें बराबर कार्य नहीं करती, तो सूर्य का अनुग्रह नहीं है। डॉक्टर भले ही अन्य कारण देते हो। अंग काम करते हुए रुक जाए, तब उन-उन अंग के सम्बन्धित देवता का अनुग्रह उठ गया है, ऐसा कहा जाएगा। शास्त्रों में इसके लिए मंत्र दिये गए है, यह पूरा भिन्न विज्ञान है। किन्तु हमें इतना तो स्वीकारना ही पडेगा कि उन-उन देवताओं का अनुग्रह होने पर भी वह-वह कार्य कर सकते हैं अर्थात् हम कर्म करने में शक्तिमान है तो यह सब देवताओं के अनुग्रह के कारण।

हम बहुत बुद्धिमान है, मुझमें ज्ञान है। किन्तु यह किसके कारण? भगवान् बताते हैं कि, 'बुद्धिमानों की बुद्धि मैं हूं..बलवान का बल मैं हूं...' इस प्रकार विचार करने

पर अहंकार, दर्प या गर्व का कोई स्थान नहीं रहता है। फिर भी मनुष्य इस वस्तु को स्वीकार न करे और ऐसा माने कि ‘ हमने स्वतंत्र प्रयास से प्राप्त किया है और सब हम ही भोगेंगे, हम इसमें से किसीको कोई भाग नहीं देना है, देवताओं के अनुग्रह को हम नहीं स्वीकारते है’ और फिर अकेले ही सब स्वाहा कर जाए तो उसे क्या कहा जाएगा? स्तेन एव सः। यह मनुष्य चोर है। भगवान ऐसे इन्सान के लिए भिन्न-भिन्न शब्दप्रयोग करते हैं। अघायुः अर्थात् पाप ही जिनका आयुष्य है। इन्द्रियारामः - जो इन्द्रियों में ही रमनेवाला है। मोघं स जीवति - जिसका जीवन व्यर्थ है। इतना ही नहीं, चोर होने के कारण उसको दण्ड भी मिलना है। उससे वह छूट नहीं सकता है।

इस प्रकार की चोरी न करना भी हमारा धर्म है।

जीवन्मुक्त

– ६२ –

बदरीनाथ

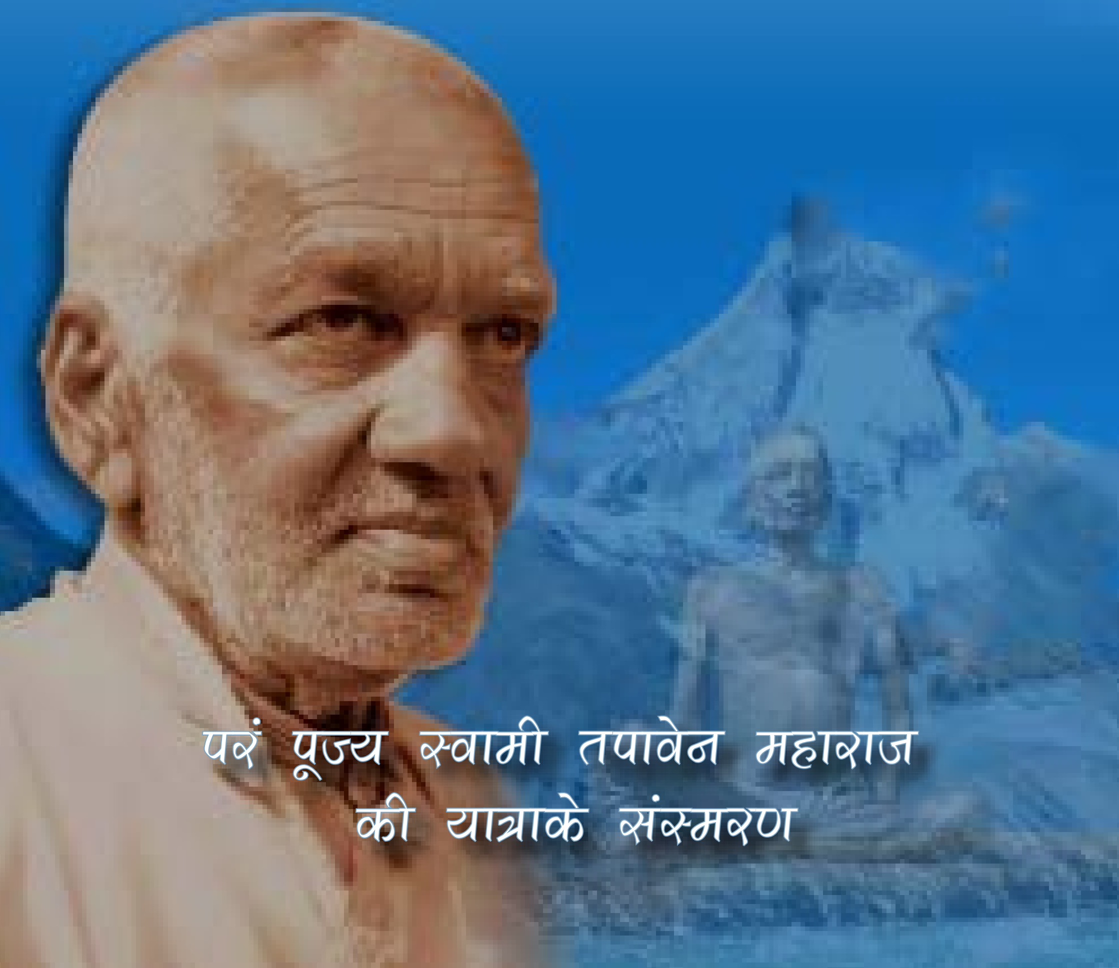

परं पूज्य स्वामी तपोवन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवन्मुक्त

पश्चिमोत्तरी हिमसंघात से बहती आनेवाली अलकनंदा तथा सीधे उत्तर की ओर से देवसरोवर से निकल जानेवाली सरस्वती का संगम यह पुण्यस्थान पुराणों में 'केशव प्रयाग' कहलाता है। इस केशव प्रयाग से सरस्वती किनारे से अठारह हजार फुट उपर स्थित 'माना पास' को पार करते हुए तिब्बत की ओर एक मार्ग जाता है। उस मार्ग को छोडकर अलकनंदा के किनारे से सीधे पश्चिम की ओर कुछ दूर यात्रा करें तो वहां 'वसुधारा' नामक प्रसिद्ध तीर्थस्थान आ जाता है। हिमाच्छन्न शिखर से उंची आवाज के साथ गिरनेवाली दो जलधाराएं 'वसुधारा' कहाती है।

'वसुधारा' से हिमसेतु का अतिक्रमण करके, अर्थात् अलकनंदा नदी के उपर विशाल रूप में फैली हुई हिमशिलाओं से

होकर, उस सुरनदी के पार पहुंचकर कुछ दूर पश्चिम की ओर प्रयाण करें तो वहां 'लक्ष्मीवन' नामक एक अति सुंदर स्थान आ जाता है। लाल रंग की छाल से ढके भूर्जवृक्षों, रंगबिरंगे विकसित कुसुमों से भरे छोटे बडे नाना प्रकार के पौधों से परिपूर्ण उस वन की शोभा को देखकर यह कल्पना सहज ही की जाती है कि यह वन साक्षात् लक्ष्मीदेवी का विहारोद्यान है। परमात्मा के करकौशल के विषय में सोचते सोचते, तथा उस उपवन का सुषमा विलास देखते-देखते मेरा मन अत्यधिक आनंदित हुआ था। कई पुष्पों को तोडकर मैंने उन्हें श्रद्धा और उत्साह के साथ सूंघ लिया और सिर पर रख लिया। यह तो सर्व विदित है कि हिमाच्छन्न हिमगिरि के शिखरों पर जब हिम पिघलता है तो यहां आषाढ, श्रावण और भाद्र मासों में कई प्रकार के दिव्य पौधे उत्पन्न होते है जो मैदानी इलाकों में देखने को भी नहीं मिलते। यही पौधे जब पुष्पित हो उठते है तो केवल मनुष्यों के ही नहीं, अपितु पशुओं के भी मन को आकृष्ट कर लेते है। अज्ञानियों के लिए तो ये केवल साधारण पौधे होते है, किन्तु विज्ञजनों के लिए ये दिव्यौषधियां है।

यहां से नारायण पर्वत के पश्चिमी पार्श्व से होकर दक्षिण की ओर जाना है। यहां से उपर मार्ग का

जीवन्मुक्त

कोई चिन्ह नहीं दिखायी पडता। पाषाण संचयों और हिम संहतियों का सामना करते हुए उपर चलते जाना है। अत्युन्नत नारायण पर्वत के शिखर से कितनी अत्यंत मनोहारी, जलधाराएं यात्रियों के मन को हठात् आकृष्ट कर लेती है। इन प्रपातों को सनातन धर्मी हिन्दू लोग न जाने कितने युगों युगों से पवित्र तीर्थ समझते आ रहे है।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

श्री कौशल्या चरित्र

– १४ –

प्रनवउं परिजन सहित विदेहू।
जाहि राम पद गूढ़ सनेहू।।

श्री कौशल्या चरित्र

मां कौशल्या ने लक्ष्मणजी के मूर्छित होने का समाचार लानेवाले दूत को जो संदेश सुनाया, उसमें लक्ष्मण के लिए लाल का विशेषण देकर उन्होंने यह स्पष्ट संकेत किया कि लक्ष्मण ने अपने चरित्र के द्वारा सच्चा लाला होना प्रामाणित कर दिया है, पर तुम्हारा लालत्व मेरी दृष्टि में सर्वथा संदिग्ध है। लक्ष्मण सलोने हैं, इसका तात्पर्य यह था कि जैसे श्रेष्ठ से श्रेष्ठ व्यंजन लवण के अभाव में स्वादरहित हो जाता है उसी प्रकार सलोने लक्ष्मण के अभाव में तुम्हारा व्यक्तित्व सर्वथा अपूर्ण है। संक्षिप्त शब्दों में भेजा गया यह संदेश उनके चरित्र की गुरुता के अनुरूप ही था। इसलिए लक्षण सहित राघवेन्द्र के लौटने का समाचार उनके लिए अपार आनन्द का हेतु बन गया। इससे बढ़कर उनके लिए आत्म-संतोष की क्या बात हो सकती थी कि उनका यशस्वी पुत्र रावण जैसे दुर्घर्ष शत्रु

को परास्त कर लक्ष्मण और सीता के साथ सकुशल अयोध्या लौट आया। पर उसका वात्सल्य भरा हृदय उन्हें सशंक बना रहा था। वे सोचने लगी कि उनके सुकुमार पुत्रोंने लंका के दुर्घर्ष राक्षसों पर कैसे विजय प्राप्त की होगी!

उनके श्रद्धालु हृदय ने यह सोचकर सन्तुष्टि पा ली कि यह गुरुदेव की कृपा का परिणाम है। गोस्वामीजी ने कौशल्या अम्बा की तुलना प्राची दिशा से की, जहां राघवेन्द्र रूपी पूर्ण चन्द्र का उदय हआ। जिसके उदय से संतप्त लोगों को शीतलता और विश्राम की उपलब्धि हुई।

।। इति कौशल्या चरित्र समाप्त।।

कथा / प्रसंग

भक्त काकभुशण्डी

भक्त काकभुशण्डी

एक बार काकभुशण्डी ने अपने गुरु को सम्मान देने से इन्कार कर दिया, जब कि उनके गुरु एक मन्दिर में भगवान शिव की प्रार्थना में लीन थे। उस अनादर से भगवान शिव ने क्रुद्ध होकर अपने कृतघ्न भक्त को श्राप दिया कि वह सर्प योनि में जन्म ले और सहस्त्र जन्मों तक तुच्छ प्राणी के रूप में जीवन बिताएं। जब उनके गुरु ने शिवजी से प्रार्थना की कि इस श्राप को कुछ कम किया जाए, तब शिवजी ने कहा कि इन सहस्त्र जन्मों के पश्चात् काकभुशण्डी श्रीराम के भक्त बनेंगे। साथ ही शिवजी ने चेतावनी दी कि वे फिर कभी किसी गुरु को अप्रसन्न न करें।

जैसा कहा गया था, शापित जन्मों के बाद काकभुशण्डी का जन्म एक ब्राह्मण

कुल में हुआ और वे श्रीराम के महान भक्त एवं तपस्वी बने। एक बार, वे लोमश ऋषि से निर्गुण ब्रह्म की उपासना की महिमा पर प्रवचन सुन रहे थे, परन्तु उन्होंने इस दृष्टिकोण को स्वीकार करने से मना कर दिया। इस प्रर क्रोधित होकर लोमश ऋषि ने उन्हें कौआ बनने का शाप दे दिया।

काकभुशण्डी ने गरुड को बताया कि प्रत्येक त्रेतायुग में वे अयोध्या जाते हैं और पांच वर्षों तक नगर में रहते हैं, जहां वे कौए के रूप में श्रीराम के बालरूप का दर्शन करते हैं। एक बार श्रीराम ने कौए के पीछे भागते हुए उसे पकडने का प्रयास किया। तभी काकभुशण्डी के मन में श्रीराम की दिव्यता पर क्षणभर के लिए संशय उत्पन्न हुआ। जब काकभुशण डी आकाश की और उड चले, तो उन्होंने देखा कि भगवान की उंगलियां सदैव उनसे दस अंगुलि भर दूर ही है। चाहे वे ब्रह्मलोक तक ही क्यों न पहुंच जाएं! जब उन्होंने अपनी आंखें खोली तो स्वयं को फिर से अयोध्या में हंसते हुए बालक श्रीराम के समीप पाया।

उन्होंने श्रीराम के मुख में एक दिव्य दर्शन देखा, जिसमें असंख्य सूर्य और चन्द्रमा विद्यमान थे और हर एक ग्रह-नक्षत्र में उन्होंने स्वयं को अयोध्या में बैठे हुए देखा। वे इन सभी लोकों में शताब्दियों तक निवास करते रहे और अन्त में श्रीराम के मुख से बाहर आकर फिर उसी क्षण में लौट आएं जहां से गए थे। यह अद्भुत लीला देखकर उन्होंने श्रीराम से मोक्ष की याचना की और उन्हें तुरन्त उसका वरदान प्राप्त हुआ। उन्होंने अपने आराध्य द्वारा प्रदत्त इसी कौआ रूप को सदा बनाए रखने का निश्चय किया, क्योंकि यही रूप उन्हें प्रिय था।

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम / मिशन समाचार

Online Vedanta Classes

Poojya Swamini Amitananda

Subject: Tattva-Bodha

Poojya Swamini Samatananda

Subject: Gita Chapter-7

आश्रम / मिशन समाचार

Online Podcast

Poojya Swamini Poornanandaji

आश्रम / मिशन समाचार

Guru Poornima Celebrations

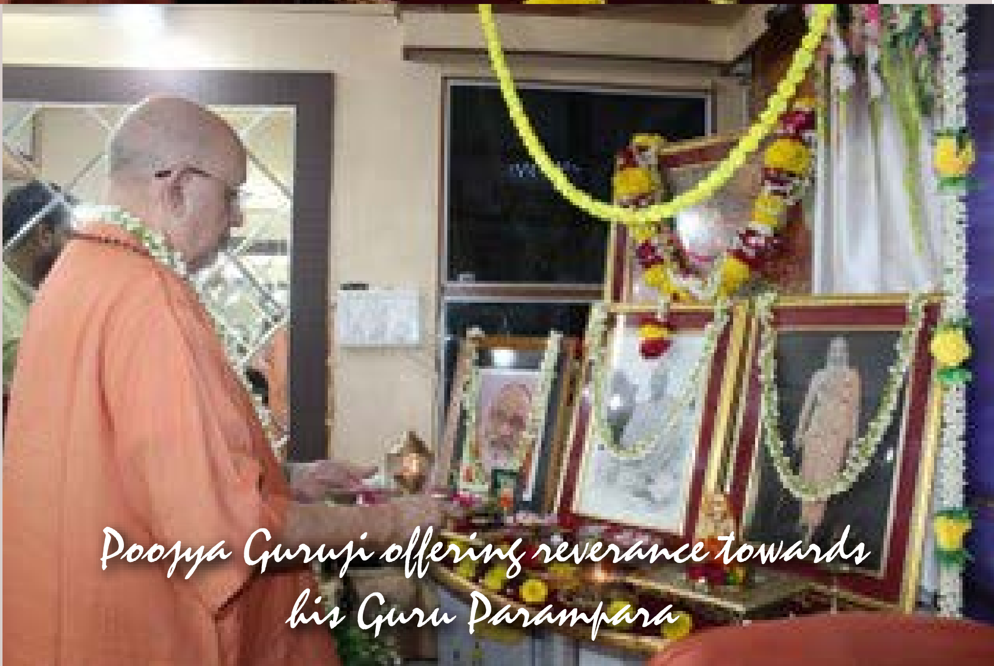

Poojya Guruji offering reverance towards his Guru Parampara

आश्रम / मिशन समाचार

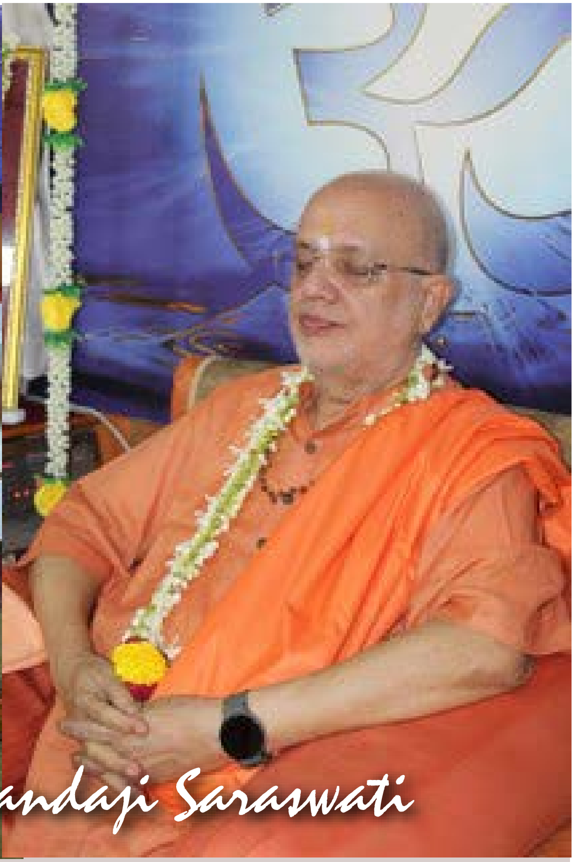

H.H. Sw Atmanandaji Saraswati

Sri Guru Paad Pujan

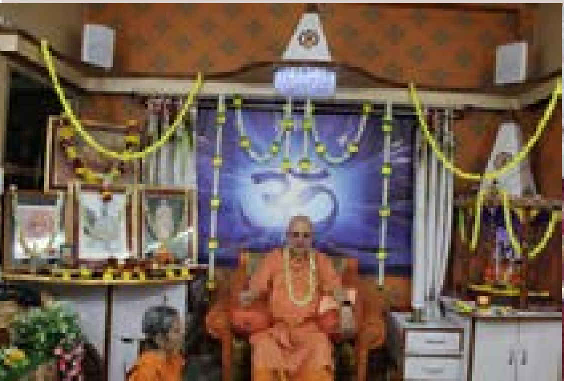

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Sri Vinod & Smt Durga Puri did the Paad Puja

Devotees from various cities converged

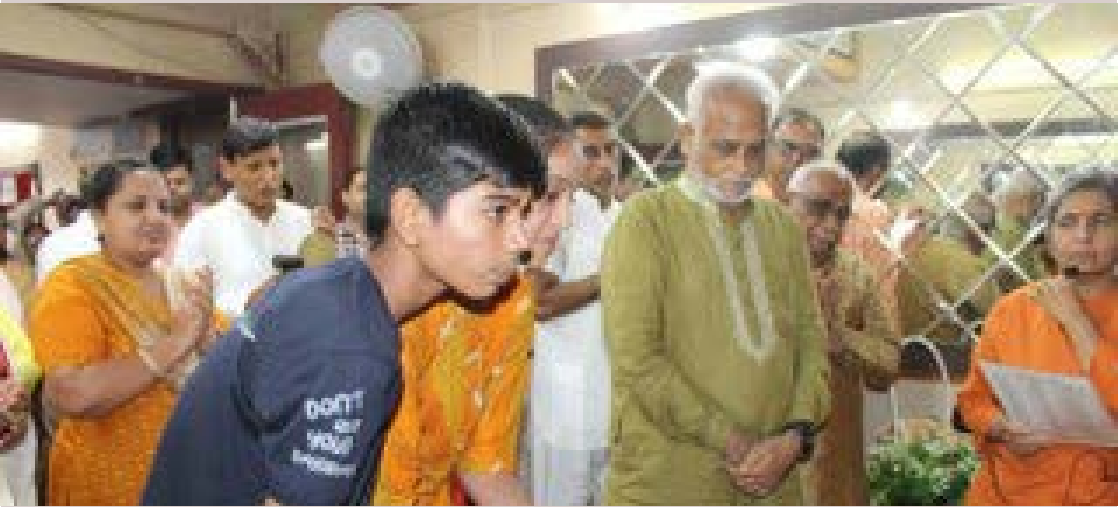

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Shraavan Maas Puja

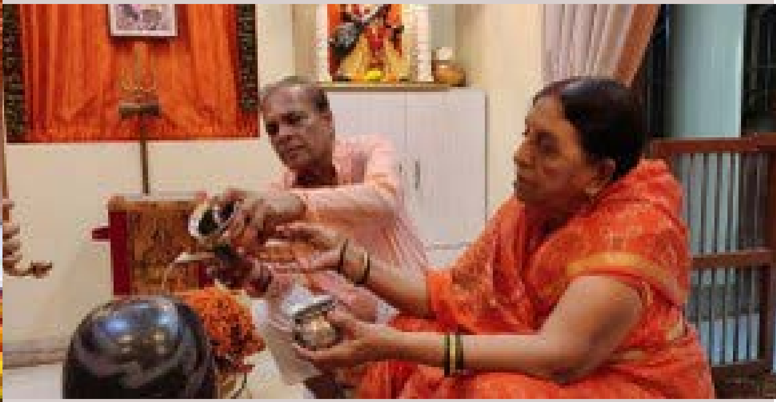

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Lovely Jhankis on every Saavan Somvar

आश्रम / मिशन समाचार

Shraavan Maas Shringaar

Bhagwan Sri Gangeshwar Mahadev

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

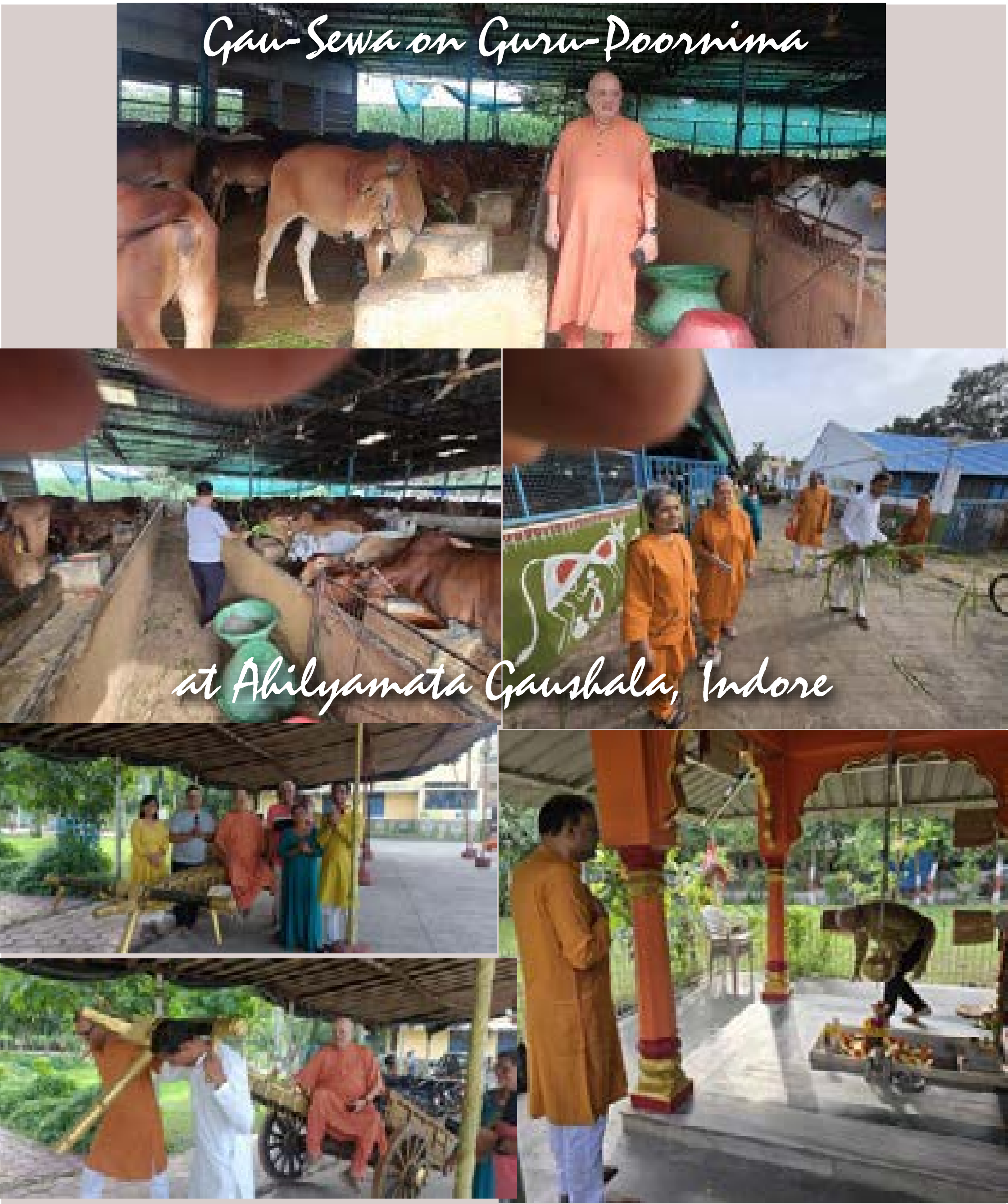

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

श्रीमद् भगवद् गीता

(शांकर भाष्य समेत) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः 7.30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

ओनलाईन सत्संग

प्रति शनिवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

आदि शंकराचार्य विरचित तत्त्वबोध

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

ओनलाईन सत्संग

प्रति रविवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

श्लोकपाठ / ध्यान / सत्संग

पूज्य स्वामिनी समतानन्दजी

Internet News

Talks on (by P. Guruji):

Video Pravachans on YouTube Channel

Video Pravachans on Internet Archive Channel

(Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

MORAL STORIES ETC

Audio Pravachans (Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS/

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Sandesh - Aug '25

Vedanta Piyush - July '25

Visit us online :
Vedanta Mission

Check out earlier issues of :
Vedanta Piyush

Join us on Facebook :
Vedanta & Dharma Shastra Group

Subscribe to our WhatsApp Channel
Vedanta Ashram Channel

Published by:
Vedanta Ashram, Indore